**ओ३म्**

**‘महर्षि दयानन्द का** **स्तवन’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 ऋषि दयानन्द जी का जन्म दिवस हिन्दी तिथि के अनुसार फाल्गुन कृष्णा दशमी संवत् 1881 विक्रमी और अंग्रेजी तिथि के अनुसार शनिवार 12 फरवरी, सन् 1825 है। आज अंगे्रजी तिथि के अनुसार उनका 192 वां जन्म दिवस है। महर्षि दयानन्द का महत्व किस कारण है? इस प्रश्न का उत्तर है कि वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना के कारण उनका महत्व है। उनके समय में वैदिक धर्म विकृत होकर प्रायः मरणासन्न हो रहा था। धड़ाधड़ लोग ईसाई और मुसलमान बनाये जाते थे। हिन्दू जो स्वयं को वैदिक धर्मी कहते हैं, वह वेदों को छोड़कर और भूलकर पुराणों के अनुसार अज्ञानता व अन्धविश्वासों से भरा हुआ जीवन व्यतीत करते थे। अन्य मतों के लोग उनकी कितनी बुराई करें व उनके लोगों का धर्म छुड़ाकर अपने धर्म में सम्मिलित कर लें, इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। एक प्रकार से हिन्दू जाति जड़ व मृतवत् जाति बन गई थी। महाभारतकाल में वेद मतानुयायी आर्य ही सारी दुनिया में थे। न कोई बौद्ध था, न जैन, न यहूदी, पारसी, ईसाई और न मुसलमान और न सिख, सभी अपने आप को सगर्व वैदिक धर्मी व वैदिक मतानुसायी कहते व मानते थे। 5200 वर्ष पूर्व समय का चक्र चला, महाभारत का महायुद्ध हुआ जिसमें भीषण हानि हुई, विद्वान व योद्धा मारे गये, समाज कमजोर हुआ, वेदों का पठन पाठन बन्द व कमजोर हुआ, गुरुकुल प्रायः बन्द हो गये और इसके परिणामस्वरूप देश और संसार में अज्ञान फैल गया। इस अज्ञान ने समाज में अन्धविश्वासों व कुरीतियों को जन्म दिया जिन्हें पाखण्ड का पर्याय कह सकते हैं। जहां अविद्या होती हैं, वहां अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां व सामाजिक असमानता जैसी विकृतियां स्वतः उत्पन्न हो जाती हैं। इसके कारण देश व समाज निरन्तर कमजोर होता गया और पहले बौद्ध व जैन नास्तिक मतों का आविर्भाव हुआ और कालान्तर में देश से बाहर यहूदी, पारसी, ईसाई व इस्लाम मत अस्तित्व में आये। यह अज्ञान बढ़ता ही गया और इस प्रकार ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी का आरम्भ हुआ और सन् 1825 की 12 फरवरी दिन शनिवार को गुजरात प्रान्त की मौरवी रियासत में टंकारा नाम कस्बे व गांव में पं. करषनजी तिवारी के घर बालक मूलशंकर का जन्म हुआ जो बाद में स्वामी दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक महत्व उनके वेदोद्धार एवं वेद प्रचार के कार्यों के कारण है। उनके अन्य सभी कार्य भी देश व समाज की दृष्टि से उत्तम व उपयोगी हैं। महर्षि दयानन्द को वेदों का तलस्पर्शी ज्ञान था। वह वेदों के ऐसे ज्ञानी, विद्वान व ऋषि थे जैसा महाभारतकाल के बाद अभी तक उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से मूल वेदों को प्राप्त किया। वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक व ज्ञान घोषित किया। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सिद्ध किया कि वेद किसी मनुष्य व विद्वान के बनाये हुए नहीं अपितु सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक व सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा चार ऋषियों को प्रदत्त ज्ञान है जो पूर्ण सत्य व निभ्र्रान्त हैं। मनुष्य को यदि सर्वांगीण उन्नति करनी है तो वह केवल वेदों के अध्ययन, उनके ज्ञान व उनकी शिक्षाओं को जीवन में धारण व पालन करने से ही हो सकती है। वेदाध्ययन से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होती है। अपने यथार्थ कर्तव्यों का बोध वेदों से ही होता है, मनुष्य सन्ध्या, उपासना, यज्ञ, अग्निहोत्र, माता-पिता व आचार्यों की सेवा, पूजा व सत्कार कर व अन्यान्य वैदिक मान्यताओं के अनुसार जीवन व्यतीत कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 ई. में स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मथुरा में विद्याध्ययन पूरा कर दीक्षा ली और संसार से अविद्या का नाश करने के लिए कार्य क्षेत्र में उतर पड़े। उन्होंने 16 नवम्बर, सन् 1869 को काशी में लगभग 30 व अधिक शीर्ष विद्वानों से लगभग पचास हजार लोगों की वहां के आनन्द बाग में उपस्थिति में मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ किया जिसमें मूर्तिपूजा शास्त्रविहित सिद्ध न होकर वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध सिद्ध हुई। 10 अप्रैल, सन् 1875 को स्वामी जी ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज कोई मत व मतान्तर नहीं अपितु वेद प्रचार प्रसार का एक **‘भूतो न भविष्यति’** आन्दोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य संसार से सभी प्रकार की अविद्या, अन्धविश्वास व सामाजिक विकृतियों को दूर कर वेदानुसार मनुष्य जीवन, समाज व देश का निर्माण करना है।

वेद प्रचार को प्रभावशाली रूप से करने के लिए महर्षि दयानन्द ने देश के अनेक भागों में जाकर उपदेश किये, विद्वानों व लोगों का शंका समाधान सहित विद्वानों से वार्तालाप किये और विधर्मियों व विपक्षियों से शास्त्रार्थ आदि किये। इन कार्यों को करने के साथ स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य आदि अनेक कालजयी ग्रन्थों की रचना की। यह ऐसे ग्रन्थ हैं जैसे महाभारत काल के बाद लिखे नहीं गये। यह अपने आप में एक सम्पूर्ण वैज्ञानिक सत्य से पोषित मानव मात्र ही नहीं अपितु प्राणी मात्र के धर्म ग्रन्थ हैं। इनका पालन कर कोई भी मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने में सक्षम व समर्थ हो सकता है। इन ग्रन्थों में निहित सत्य ज्ञान से बढ़कर संसार में मनुष्य व उसकी जीवात्मा के लिए कुछ भी नहीं है। भारत का सर्वांगीण पतन मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना वर्णव्यवस्था, सामाजिक अन्याय व भेदभाव तथा नारियों व शूद्र वर्ण के बन्धुओं की शिक्षा के अधिकार पर रोक के कारण हुआ था। महर्षि दयानन्द ने इन सभी अवरोधों को दूर करने के लिए प्राणपण से कार्य किया व आंशिक रूप से सफल भी हुए। यदि संसार के लोगों ने निष्पक्ष भाव से ऋषि दयानन्द के विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों पर ध्यान दिया होता व उन्हें अपनाया होता तो संसार से अधिकांश व सभी समस्याओं का अन्त हो जाता। दुःख है कि अज्ञानता व स्वार्थ के कारण संसार के लोगों ने वैदिक मत की श्रेष्ठ बातों व विचारों को जानने व अपनाने का प्रयास ही नहीं किया जिससे हानि यह हुई कि संसार में सर्वत्र अशान्ति है, पशु-पक्षी दुःख पा रहे हैंे, मनुष्य अकाल मृत्यु का शिकार हो रहे हैं, संसार में सर्वत्र असाध्य रोगों की वृद्धि हो रही है, सामाजिक असमानता और गरीबी व अमीरी के बीच खाई बढ़ी है। आज भारत के उत्तर प्रदेश में ही कुछ गरीब परिवार व उनके छोटे छोटे बच्चे घास की रोटी खाने के लिए विवश हैं। मनुष्य का मन वर्तमान धर्म व संस्कृति ने कैसा बना दिया है कि पैसे वालों को इन पर दया ही नहीं आती और आज भी अमीरों व राजनीतिक दलों के खजाने केवल अपनी सुख-सुविधाओं के लिए होते हैं, गरीबों के दुःखों से शायद किसी को भी कोई सरोकार नहीं है। महर्षि दयानन्द के विचारों व वेद के सिद्धान्तों को क्रियान्वित रूप देने पर इन व ऐसी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता। दुःख, महादुःख।

महर्षि दयानन्द के समय में देश अंग्रेजों का गुलाम था। देश की उन्नति के लिए इस गुलामी को उतार फेंकना था। अतः महर्षि दयानन्द ने जहां वैदिक धर्म का प्रचार किया वहीं उन्होंने देश के लोगों को स्वदेशी राज्य के महत्व को भी बताया। उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में घोषणा की कि कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता। इन पंक्तियों में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का सन्देश देकर अपूर्व साहस का परिचय दिया है। उन्होंने कहा कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है और विदेशी अर्थात् अंग्रेजों व अन्यों का राज्य कितना भी अच्छा हो स्वदेशी राज्य की तुलना में पूर्ण सुखदायक वा उन्नतिदायक नहीं हो सकता। यह साहस पूर्ण शब्द लिख कर महर्षि दयानन्द ने अंग्रेजों से बगावत कर दी थी। ऐसे उनके अनेक वचन और भी हैं जो उनके ग्रन्थों में यत्र तत्र विद्यमान हैं। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में मूर्तिपूजा के प्रकरण में महर्षि ने लिखा है कि **‘जब संवत् 1916 (सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय) के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर की मूर्तियां अंगरेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहां गई थीं? प्रत्युत बाघेर (गुजरात के) लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं (अंगरेजों) को मारा परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके (अंगरेजों के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिस का रक्षक (मंदिर में पूजी जाने वाली मूर्ति) मार खाय उस के शरणागत (मूर्तिपूजक) क्यों न पीटे जायें?’** यहां भी महर्षि दयानन्द ने बगावत के स्वर प्रस्तुत किये हैं। यह भी बता दें कि जब महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यह शब्द लिखे थे तब तक कांग्रेस की स्थापना नहीं हुई थी। कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में हुई, इसके संस्थापक भी विदेशी थे और उनका उद्देश्य भी देश को आजाद कराना नहीं था। आर्यसमाज से इतर कोई धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संगठन नहीं था जिसने आजादी की बात की हो। स्वामी जी को ही देश में सबसे पहले आजादी, स्वदेशी, स्वराज्य व सुराज्य की बात करने का श्रेय है और देश की आजादी का आन्दोलन उन्हीं के विचारों की देन कहा जा सकता है। यह भी बता दें कि आजादी के आन्दोलन में लगभग 80 प्रतिशत आर्यसमाजी विचारों व आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित लोग थे। सरकारी विभागों की खुफिया रिर्पोटों में भी यह कहा गया कि जहां जहां आर्यसमाजें हैं वहीं वहीं अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत, अशान्ति या नदतमेज है। यह भी तथ्य है कि आजादी के अहिंसात्मक आन्दोलन के आद्य नेता गोपाल कृष्ण गोखले थे। गांधी जी उनके शिष्य माने जाते हैं। गोखले जी महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य थे और रानाडे महोदय महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्य थे। उन्होंने ही स्वामी जी को पूना बुलाकर उनका आतिथ्य किया और वहां उपदेश कराये थे। इस प्रकार आजादी का अहिंसात्मक आन्दोलन भी ऋषि की शिक्षाओं व प्रेरणाओं से आरम्भ होकर महादेव रानाडे, गोखले जी, गांधी जी से होता हुआ, सरदार पटेल, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जी आदि द्वारा विस्तार को प्राप्त हुआ। यदि गरम दल व क्रान्तिकारी नेताओं की बात करें तो क्रान्तिकारियों के आद्य गुरु पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा थे जो महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य रहे। उन्हीं की प्रेरणा व सहयोग से पं. श्यायमजी कृष्ण वर्मा लन्दन गये थे और वहीं से वह क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करते थे। अंग्रेज विरोधी अपनी गतिविधियों के कारण ही उन्हें लन्दन छोड़ना पड़ा था और जेनेवा में उनकी मृत्यु हुई थी।

महर्षि दयानन्द का देश की उन्नति वा उत्थान में सर्वाधिक योगदान हैं। उन्होंने न केवल धार्मिक अन्धविश्वासों पर ही प्रहार किया अपितु देश को अज्ञान व अविद्या से निकालने के लिए **‘अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये’** जैसा क्रान्तिकारी सिद्धान्त भी दिया। इसे क्रियान्वित रूप उनके शिष्यों स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा हंसराज आदि ने दिया। अतीत में वैदिक धर्मी हिन्दुओं का लोभ व बल प्रयोग करके किया गया धर्मान्तरण और उसके दुष्प्रभावों से देश व समाज को बचाने के लिए ऋषि दयानन्द ने शुद्धि का मंत्र दिया था। पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि अनेक आर्यनेताओं ने प्राणपण से शुद्धि का क्रियात्मक प्रचार किया और इसी कारण विधमिर्यों ने उन्हें शहीद भी किया। देशहित का ऐसा कोई कार्य नही है जो महर्षि दयानन्द जी ने न किया हो। उन्होंने देशवासियों की सोई हुई आत्माओं को जगाया था। उनका देश पर जो ऋण है, उसे कभी चुकाया नहीं जा सकता। जब तक यह संसार विद्यमान है, उनकी कीर्ति अक्षुण है। हम आज उनके जन्म दिवस पर उनको अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। सनातन वैदिक धर्मी बन्धुओं से भी हम विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि यदि इतिहास में जीवित रहना चाहते हैं तो महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों को सर्वांश में अपनायें अन्यथा यह जाति बची रहेगी, इसमें हमें संशय है। **‘धर्मो एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।’** (मनुस्मृति) जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। जो धर्म की रक्षा नहीं करता उसकी रक्षा धर्म भी नहीं करता अर्थात् धर्म द्वारा रक्षित न होने से वह बच नहीं सकता है। आज इसे जानने, समझने व इस पर आचरण की आवश्यकता है। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘आर्यसमाज लक्ष्मण चौक देहरादून के साप्ताहिक सत्संग**

**में ऋषि दयानन्द का जन्म-दिवस मनाया गया’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज लक्ष्मण देहरादून का मुख्य आर्यसमाज है जहां आर्यसमाज की अनेक गतिविधियां संचालित की जाती हैं। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ होता है तथा रविवारीय सत्संग का आयोजन भी किया जाता है। समाज के पास अपनी विस्तृत यज्ञशाला, सत्संग भवन, अतिथि निवास, पुरोहित निवास एवं कार्यालय है। यहां एक प्राथमिक विद्यालय भी संचालित किया जाता है जहां बच्चों को ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज विषयक ज्ञान कराने के साथ वैदिक धर्म के संस्कार भी दिये जाते हैं। समाज की ओर से एक होम्योपैथी का चिकित्सालय भी संचालित है। सम्प्रति उत्तराखण्ड राज्य विद्युत आयोग के वरिष्ठ सदस्य श्री के.पी. सिंह जी समाज के प्रधान हैं एवं भारतीय सेना से निवृत्त अधिकारी श्री एस.पी. सिंह जी इस समाज के मंत्री हैं। श्री रणजीत सिंह जी आर्यसमाज के युवा पुरोहित हैं जो गुरुकुल एटा के स्नातक हैं एवं आर्यसमाज के एक अच्छे विद्वान एवं सुयोग्य वक्ता हैं। आर्यसमाज लक्ष्मण चैक के प्रमुख प्रेरणास्रोत के रूप में उत्तराखण्ड के प्रमुख आर्यसमाजी नेता इ. प्रेम प्रकाश शर्मा जी हैं जो अन्य देहरादून की सभी समाजों के भी प्रेरक हैं। श्री शर्मा देश विदेश में प्रसिद्ध आर्य संस्था **‘वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून’** के मंत्री हैं जिनके कुशल नेतृत्व में आश्रम प्रगति के पथ पर आरुढ़ है।

आज हमें आर्यसमाज लक्ष्मण चैक जाकर वहां के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों से मिलने का अवसर मिला। समाज में आज प्रातःकाल सन्ध्या व यज्ञ सम्पन्न किया गया। तदन्तर समाज के विद्यालय की बालिकाओं ने आर्यसमाज से सम्बन्धित भजन प्रस्तुत किये जो बहुत ही मधुर एवं रुचिकर थे। इसके बाद आर्यसमाज के पुरोहित श्री रणजीत सिंह जी ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास का लगभग 15 मिनट तक पाठ किया। आज अंग्रेजी तिथि के अनुसार ऋषि दयानन्द का जन्म दिवस होने के अवसर पर मनमोहन कुमार आर्य को ऋषि जीवन पर बोलने का आग्रह किया गया। अपने आधे घण्टे के सम्बोधन में उन्होंने ऋषि दयानन्द के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि ऋषि जैमिनी पर टूट चुकी ऋषि परम्परा ऋषि दयानन्द के आगमन व उनके कार्यों से पुनः आरम्भ व स्थापित हुई। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द महाभारत काल के महर्षि वेदव्यास, इससे पूर्व के सभी ऋषियों व ऋषि जैमिनी की परम्परा वाले ऋषि थे। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी सहित आर्यसमाज के सभी वेदभाष्यकारों व वैदिक विद्वानों को उन्होंने ऋषि परम्परा का पोषक बताया। श्री आर्य ने ऋषि दयानन्द द्वारा वेदों की प्राप्ति, उनके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय सहित वेदभाष्य आदि के प्रणयन एवं उनके कार्यों एवं ग्रन्थों के महत्व की चर्चा करते हुए विश्व धर्म के परिप्रेक्ष्य में उन पर विचार व्यक्त किये और इन ग्रन्थों को विश्व के मनुष्यों की श्रेष्ठ सम्पदा बताया जो मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराने में समर्थ हैं। ऋषि दयानन्द द्वारा वैदिक धर्म की स्थापना कर अज्ञान व अन्धविश्वासों का जो खण्डन किया गया उसका उल्लेख कर उन्होंने ऋषि दयानन्द के देश व समाज को महाभारतकाल व उससे पूर्व के वेद पोषित समाज जैसा चरित्रवान् देश व समाज बनाने के कार्यों पर भी प्रकाश डाला। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध और गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था सहित जन्मना जातिवाद पर ऋषि के विचारों को भी उन्होंने प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द जी के देश की आजादी में योगदान की विस्तार से चर्चा भी की गई। अन्य अनेक विषय भी उनके सम्बोधन में सम्मिलित थे जिनसे हमारा देश, समाज व विश्व लाभान्वित हुआ है। सम्बोधन को विराम देने से पूर्व आर्यसमाज के तीसरे नियम की चर्चा कर उन्होंने कहा कि आप वेदों का नियमित स्वाध्याय तो करें ही साथ ही सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय भी नियमित रूप से अवश्य करें। इससे आपको नई नई प्रेरणायें मिलेंगी और देश व समाज को लाभ होगा। उन्होंने ऋषि जन्म दिवस के अवसर पर सभी को बधाई भी दी।

आर्यसमाजों के प्रेरणासे्रात इ. प्रेमप्रकाश शर्मा जी ने भी समाज के सत्संग को सम्बोधित किया। आपने वैदिक साधन आश्रम तपोवन की मासिक पत्रिका **‘पवमान’** एवं इसके सम्पादक आर्य विद्वान श्री कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री एवं मनमोहन कुमार आर्य की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि देहरादून को अनेक आर्यविद्वानों की सेवाओं उपलब्ध हैं। इस सन्दर्भ में उन्होंने आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य डा. धनंजय और डा. यज्ञवीर जी, द्रोणस्थली कन्या आर्ष गुरुकुल की आचार्या डा. अन्नपूर्णा एवं विदुषी आर्य बहिन श्रीमती सुखदा सोलंकी का भी उल्लेख किया। श्री शर्मा ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना कर देश और समाजोत्थान का महनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि देश स्वामी दयानन्द के उपकारों का ऋणी है। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने कहा कि हम आर्यसमाज के नियम एवं विधानों का कितना पालन करते हैं, इस पर हमें चिन्तन करने की आवश्यकता है। शर्मा जी ने बताया कि कल उन्होंने आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी के साथ मिल कर आर्यसमाज के वेद प्रचार कार्यों की शिथिलता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमें समाज मन्दिरों की दीवारों से बाहर जाकर समाज के लोगों के बीच में महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की चर्चा व प्रचार करना होगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए हम एक आर्य विद्वान और भजनोपदेशक की टोली बना रहे हैं जो उत्तराखण्ड का भ्रमण करके युवाओं व अन्य लोगों में उनके बीच जाकर प्रचार करेंगे। शर्माजी ने बताया कि देहरादून में ईसाईयों की संस्थायें सक्रिय हैं जो लोगों का धर्मान्तरण करती हैं। यह लोग गरीबों को शिक्षित भी करते हैं, उनका आर्थिक सहायता भी कर देते हैं और ऐसे कृपा पात्रों का धर्म परिवर्तन भी करते हैं। हमें इसका विरोध करना है और धर्मान्तरण से लोगों की रक्षा करनी है। श्री शर्मा जी ने सेवानिवृत लोगों को कहा कि वह जन-जन में प्रचार के लिये अपना समय आर्यसमाज के प्रचार कार्यों को दें। उन्होंने कहा कि बिना प्रचार किये काम नहीं बनेगा और कहा कि अन्धकार आने वाला है। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने तपोवन एवं आर्यसमाज लक्ष्मरणचैक के विद्यालयों की शिक्षिकाओं एवं बच्चों के लिए आयोजित तीन दिवसीय आर्य संस्कार स्थापन प्रशिक्षण शिविर पर भी प्रकाश डाला जिसका आज सायं समापन होना है। उन्होंने कहा कि हम अपनी शिक्षण संस्थाओं के पूर्व शिक्षित युवाओं को बुलाकर 17 अप्रैल, 2017 को आर्य समाज के प्रचार के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। उनका यह प्रशिक्षण दो दिन चलेगा।

पुरोहित श्री रणजीव सिंह जी ने कार्यक्रम का समापन कराया। उन्होंने कहा कि कोई भी अच्छा काम करने में उम्र की बाधा नहीं होती। उन्होंने बताया कि प्रसिद्ध उद्योगपति टाटा ने 75 वर्ष की आयु में विमान उड़ा कर यह सन्देश दिया है। उन्होंने लोगों को जीवन में सक्रिय होने की प्रेरणा की। पुरोहित जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में वेदों के प्रचार का कार्य किया। वह कभी निराश नहीं हुए। उन्होंने सभी सदस्यों व श्रोताओं को आर्यसमाज के दस नियमों का पाठ भी कराया। इसके बाद संगठन सूक्त व शान्तिपाठ के साथ वैदिक धर्म आर्य पुरुषों के जयकारों से आज की सभा का समापन हुआ।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**-वैदिक साधन आश्रम तपोवन में बच्चों को आर्य संस्कार प्रदान करने हेतु शिविर-**

**महान व्यक्ति वह लोग बनते हैं जो अपनी गलतियों को साहस पूर्वक स्वीकार करते हैं और उन गलतियों को सुधारने का महान प्रयास करते हैं: आचार्य आशीष दर्शनाचार्य**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में आर्य शिक्षण संस्थाओं के बालक व बालिकाओं को आर्य संस्कारों से दीक्षित करने के लिए 3 दिवसीय शिविर आयोजित किया गया है जिसका आज दूसरा दिन था। इस शिविर में स्वामी सत्यपति जी के शिष्य आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी दो आर्य शिक्षण संस्थाओं की कक्षा 7 से 9 तक के विद्यार्थियों को आर्य संस्कारों में दीक्षित कर उनके अध्ययन को उच्चतम स्थिति तक पहुंचाने के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं। कल इन विद्यालयों की शिक्षिकाओं को बच्चों को संस्कारित करने हेतु प्रशिक्षित किया गया था जो प्रातः 10.00 बजे आरम्भ होकर सायं 4.00 बजे तक चला। आज के शिविर में इन विद्यालयों की उपर्युक्त तीन कक्षाओं के बालक-बालिकाओं को शिक्षा में अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए शिक्षित किया गया।

प्रातःकालीन सत्र में आचार्य आशीष जी ने बच्चों से पूछा कि दुनियां की सबसे शक्तिशाली चीज क्या है? एक बच्चे ने उत्तर दिया कि ज्ञान संसार की सबसे शक्तिशाली चीज है। उन्होंने बताया कि दूसरी शक्तिशाली चीज है दिमाग और मन। जो व्यक्ति इनका उपयोग करना सीख लेता है वह पावरफूल, प्रभावशाली व जीनीयस होता है। आचार्य जी ने कहा कि जब बालक पढ़ने बैठते हैं तो उनका मन भटकता है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपने मन को नियंत्रित कर लेते हैं वह बहुत शक्तिशाली बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति ही मन को नियंत्रण में रखकर महान भी बन जाते हैं। उन्होंने बच्चों से कहा कि मन को नियंत्रित करने की कला सबको सीखनी चाहिये। आचार्य जी ने बताया कि भगवान का मुख्य व निज नाम ओ३म् है। उन्होंने बच्चों को कहा कि मुख्य व निज शब्द ओ३म् के विशेषण हैं। ईश्वर के मुख्य नाम से इतर उसके सभी नाम गौणिक या सेकेण्डरी होते हैं। आचार्य जी ने कहा कि हम जो काम करते हैं उसे मन से पूर्णतया महसूस करने से हमारा मन एकाग्र हो जाता है। मन को कनसनट्रेट करना या फोकस करना मन को एकाग्र करने को ही कहते हैं। उन्होंने बताया कि जब हम लम्बी श्वांस भरे तो मन को श्वांसों पर केन्द्रित कर उसे अनुभव करें। आचार्य जी ने कहा कि मन को एकाग्र करने का नियम यह है कि जो काम करें उसे महसूस करते हुए ध्यान लगाकर करें। उन्होंने कहा कि यदि ओ३म् बोलें तो ओठों के खुलने पर ध्यान करेंगे या ओठों के मूवमेंट पर अपना ध्यान व मन केन्द्रित रखेंगे। आचार्य जी ने बच्चों को समझाते हुए कहा कि जब हम किसी विषय का ध्यान करें और हमारा मन भटक जाये तो हमें उन भटकावों को गिनना चाहिये। उन्होंने बताया कि इसे काउंटिंग मैथड **(Counting Method)** कहते हैं। जितनी देर ध्यान करें और हमारा मन भटके, एक, दो, तीन, चार व अधिक बार तो उसे गिन लें। बार बार अभ्यास करने से जब यह भटकाव बन्द हो जाता है तो वह ध्यान की अच्छी स्थिति होती है।

इसके बाद आचार्य आशीष जी ने गहरा श्वांस भर कर उसे लम्बी श्वांस के साथ बाहर छोड़ते हुए साथ में ओ३म् का उच्चारण करने का अभ्यास करने का बच्चों को निर्देश किया। उन्होने कहा कि ऐसा करते हुए हमारा मन व ध्यान हमारी श्वांस, ओठों के खुलने व ओ३म् के उच्चारण पर रहेगा। यदि मन भटकता है तो वह जितनी बार जिसका भटके, उसकी गणना व काउंटिंग करे। इसके बाद सभी ने गहरी सांस भरकर सांस छोड़ने हुए ओ३म् का लम्बा उच्चारण किया और मन के भटकाव की गणना की। यह प्रक्रिया पूरी होने पर आचार्य जी ने सबसे पूछा कि किसका मन कितनी बार भटका। इसके उत्तर में किसी ने एक बार, किसी ने दो, तीन व चार बार और एक ने ग्यारह बार मन भटकने की बात बताई। इस पर टिप्पणी करते हुए आचार्य आशीष जी ने कहा कि महत्वपूर्ण बात यह थी कि आप लोगों ने अपने मन के भटकावों को गिनने का काम किया। उन्होंने बच्चों को कहा कि आपने अपने मन के भटकावों की गिनती करके हिमालय पर विजय पाने का यह काम कर दिया है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति जीवन में अपनी प्रमुख बातों का हिसाब रखता है वह व्यक्ति आगे बढ़ने वाला होता है। अगली बार वह न्यूवता रहने वाले काम को और अधिक सतर्क होकर करता है। बच्चों को आचार्य जी ने बताया कि पढ़ाई अच्छी तरह करने के लिए हमारे सामने लक्ष्य या टारगेट होना चाहिये। टारगेट यह हो कि हमें परीक्षा में कितने प्रतिशत नम्बर लाने हैं। उन्होंने बच्चों से पूछा और बताया कि कम्पटीशन दूसरों से नहीं अपने से ही किया जाता है। उन्होंने कहा कि कम्पटीशन सभी को अपनी अन्तिम परफारमेंस से करना होता है। बच्चा जब पढ़ने बैठता है तो वह काउन्टिंग मैथड का उपयोग करता है। वह पढ़ाई में अपने मन की भटकने की स्थिति को निरन्तर कम करता जाता है। ऐसा करके वह कम समय में अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेता है। आचार्य जी ने बच्चों को कहा कि पढ़ाई के समय में पढ़ाई करें। मन को भटकने न दें। यदि मन भटकता है तो काउंटिंग मैथड का उपयोग करें।

इसके बाद आचार्य आशीष जी ने बच्चों से पूछा कि महान व्यक्ति कौन बनते हैं? इसका उत्तर उन्होंने बच्चों से भी पूछा और उसके बाद कहा कि महान व्यक्ति वह लोग बनते हैं जो अपनी गलतियों को साहस पूर्वक स्वीकार करते हैं और उन गलतियों को सुधारने का महान प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति ऐसा करता है वह महान बन जाता है। दुनियां उसे सदियों तक याद करती है। इस पाठ को उन्होंने सभी बच्चों को सुनाने को कहा। अन्त में उन्होंने इन वाक्यों को सभी बच्चों को मिलकर कई बार दोहराने को कहा जिससे वह उन्हें स्मरण हो जाये। कक्षा चलते हुए डेढ़ घंटा हो गया था। इसके बाद बच्चों को फलाहार कराया गया और फिर नये विषयों पर चर्चायें की गई। यह कार्यक्रम वैदिक साधन आश्रम तपोवन के सचिव ई. प्रेम प्रकाश शर्मा जी की प्रेरणा का परिणाम है। शर्मा जी से पृथक से भेंट करने पर उन्होंने बताया कि मेरे मन में इस प्रकार के विचार उठते रहते हैं जिन्हें वह क्रियान्वित करने का प्रयास करते हैं। आश्रम में चल रहा यह कार्यक्रम कल सायं समाप्त होगा।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने बताया है कि आश्रम के 5 दिवसीय ग्रीष्मोत्सव की तिथियां निर्धारित हो गयीं है। यह आयोजन बुधवार 10 मई से रविवार 14 मई, 2017 तक होगा। इस अवसर पर आश्रम में वेद पारायण यज्ञ होगा। प्रवचनों के लिए आगरा के प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी को आमंत्रित किया गया है। श्री कुलश्रेष्ठ जी पहले भी आश्रम के आयोजनों में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित रहे हैं। आप वैदिक विषयों पर बहुत प्रभावशाली विचार प्रस्तुत करते हैं जिनमें वर्तमान काल की देश व समाज स्थिति को भी केन्द्र में रखते है। यूट्यूब पर भी आपके दो तीन प्रवचन उपलब्ध हैं जो हमने डाले हैं। इसे यूट्यूब पर सर्च कर सुना जा सकता है।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**